आयुर्वेद विश्व विभूति वेद

सभी प्रकार की विभूतियों को देने वाला ही आयुर्वेद है। मनुष्य की आयु दीर्घ अर्थात् निरोग हो यही आयुर्वेद का उद्देश्य है। कहा गया है कि–

''धर्मार्थकाममोक्षाणां आरोग्यं मूलमुत्तमम्''

अर्थात् धर्म अर्थ काम और मोक्ष का मूल आरोग्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये – (४) पुरुषार्थ मनुष्य के बतलायें गये हैं। अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं हैं।

इसमें अत्यन्त श्रेष्ठ मूल है अर्थात् व्यक्ति का रोगों से सर्वथा मुक्त रहना। आयुर्वेद ही हमारा सबसे बड़ा धर्म है, आयुर्वेद ही हमारा सबसे बड़ा अर्थ है, आयुर्वेद ही हमारा सबसे बड़ा काम है तथा आयुर्वेद ही हमारा मोक्ष निहित है।

आयुर्वेद ही हमारा समय निर्धारण करता है कि हमें कम खाना–पीना है कब सोना–जागना है। आयुर्वेद ही हमें अर्थ को अर्थ की दृष्टि से देखना सिखाता है।

अब देखते हैं कि आयुर्वेद और काम का क्या सम्बन्ध है? समुद्र के विषय में कहा जा सकता है कि इसमें पानी की कमी हो सकती है लेकिन मनुष्य की कामनाओं में कोई कमी नहीं हो सकती। हमें वही काम करना चाहिए जिसकी अनिवार्यता है।

पहला काम है **''काम्यवेदाधिगमः''**

अर्थात् वेद को पूरी तरह प्राप्त कर लेना ही पहला काम है।

''कर्मयोगश्च वैदिक''

अर्थात् वैदिक आधार पर कर्म योग करना ही दूसरा काम है।

यहीं हमारी पहली, अंतिम और सर्वश्रेष्ठ कामनायें होनी चाहिए।

स्वायम्भु मनु की दृष्टि में भी आयुर्वेद का यही अर्थ है। धर्मवेद, कामवेद, अर्थवेद, मोक्षवेद। आयुर्वेद चारों वेदों का धनी है। अत: आयुर्वेद ही सम्पूर्ण विश्वविभूतियों को देने वाला सिद्ध होता है।

एक प्रसंग आता है कि एक बार ब्रह्मा जी ने सोचा कि मैंने दक्षप्रजापति को सृष्टि रचना का आदेश दे तो चुका किन्तु सृष्टि रचना क्यों करें। क्योंकि पहले आयुर्वेद की सृष्टि आवश्यक है।

आवश्यकता आविष्कारों की जननी होती है किंतु यहाँ तो सृष्टि रचना के पूर्व ही आयुर्वेद की सृष्टि विषय में सोच लिया गया था।

इसको यथावत् उदाहरण से देखते हैं कि शुक्र और गर्भ से शिशु की उत्पत्ति होती है किंतु पुत्र उत्पन्न से पहले गर्भ का निर्माण क्यों हुआ अथवा इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी ? जब शिशु का जन्म होने वाला होता है तो इसके पूर्व ही स्तनों में दूध का आगमन होने लगता है ताकि शिशु गर्भ से बाहर निकलते ही उसका सेवन कर सके। आधार से लेकर जन्म तक की सभी व्यवस्थायें भगवान ब्रह्मा जी द्वारा स्थापित कर दी जाती है और समय आने पर वे सभी क्रियाशील भी हो जाती है।

अत: आयुर्वेद विश्व की सृष्टि से पूर्व ही बना हुआ है हमारे श्वेताश्वतरोपनिषद् कहते हैं कि-

''यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वे वेदाश्च प्रहिणोति तस्मै।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वेशरणमहं प्रपद्ये।।''

श्वेताश्वतरोपनिषद् ६/१८

अर्थात जो सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा को उत्पन्न करता है और उसके लिये वेदों का दान करता है, आत्म-बुद्धि को प्रकाशित करने वाले उस देव की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

आयुनाम के तत्व को जो धारण करता है वही आयुर्वेद है। रोगग्रस्त होने पर औषधि देना ही आयुर्वेद नहीं है अपितु जीव अस्वस्थ हुआ क्यों ? इसका कारण जानना आयुर्वेद है। एक पुरुष के (४) रूप हमारे सामने हैं-

१. **उदबीज** - ऊपर की ओर से भेदन करते हुये निकल जाना वह उद्बीज कहलाता है। सम्पूर्ण वनस्पति की उत्पत्ति उद्बीज श्रेणी में आती है।

२. **अण्डज** - अण्डे से जिस प्राणी की उपत्ति होती है वह अण्डज कहलाता है। सभी पक्षी अण्डज श्रेणी में आते हैं।

३. **स्वेदज** – प्राणी से प्राणी की उत्पत्ति स्वेदज उत्पत्ति कहलाती है। कीट–पतंग, मक्खी, मच्छर आदि स्वेदज श्रेणी में आते हैं।

४. **जरायुज** – जिस प्राणी की उत्पत्ति जरायु (जेर) से लिपटे हुये होती है वह जरायुज श्रेणी में आता है। मनुष्य, हाथी, घोड़ा, गौ आदि की जरायुज श्रेणी है।

आयुर्वेद में ब्रह्मर्षि ब्रह्मा ने अष्टांग आयुर्वेद की रचना की थी। आज हमें उनके मूलत: तीन ही अंग प्राप्त होते हैं। सबसे पहले महर्षि कश्यप का ''कौमार्यमृत्य'' ग्रंथ है जिसमें छोटे बच्चे के पैदा होते ही हम उसकी चिकित्सा में लग जाते हैं। दूसरा जो ग्रंथ मिलता है वह शल्य चिकित्सा का है। इस शल्य चिकित्सा की रचना करने वाले महानुभाव है धीरोदात महर्षि धन्वन्तरी जी। शिष्यों में उपदेश देने वाले (६) ऋषि हुये हैं जिनमें प्रमुख महर्षि सुश्रुत जी है। तीसरा ग्रंथ हमें जो मिलता है वह काय है और काय का सम्बन्ध अग्नि से होता है।

भगवान ब्रह्मा जी ने सबसे पहले आयुर्वेद का अध्ययन अपने सबसे बड़े पुत्र प्रजापति दक्ष को करवाया। प्रजापति दक्ष ने अध्ययन करवाया अश्विनी कुमारों को, अश्विनी कुमारों ने सम्पूर्ण आयुर्वेद भगवान इन्द्र को दिया और भगवान इन्द्र से आयुर्वेद का अध्ययन करने वाले बहुत से ऋषि हुये हैं जिनमें महर्षि भारद्वाज प्रमुख है।